International Journal of Arts & Education Research

मूल्य आधारित शिक्षण

निमिषा इलायस*[1], डॉ0 ऋतु भारद्वाज[2]

[1]शोधार्थी, जे.जे.टी.यू., झूंझनूं।
[2]शोध निर्देशिका, जे.जे.टी.यू., झूंझनूं।

वस्तुतः मूल्य परक शिक्षा उन सभी क्रियाओं एवं प्रक्रियाओं की समष्टि है जिनसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कुशलताओं एवं सृजनताओं से व्यवहारपरक मूल्यों के व्यवहार रूपी प्रतिमानों की रचना करता है। इनका आधार जैवकीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं पारिस्थितिकी होता है। जिनका प्रभाव शिक्षा एवं शिक्षक के विभिन्न स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया शिक्षा जीवन का वह आईना है जिसमें मनुष्य अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को प्रतिबिम्ब के रूप में देखता है। इसका प्रमुख उद्देश्य ज्ञान पिपासा जगाने के साथ व्यक्ति को संस्कारी विचारवान और संयमी प्राणी बनाना है।

जीवन के सुखद निर्वाह के लिये शिक्षा को धारण करना शिक्षा को ग्रहण करना तथा शिक्षा को प्राप्त करना प्रत्येक मानव मात्र के लिये अति आवश्यक माना गया है। शिक्षा द्वारा ज्ञान तथा विवेक का उदय होता है। इसी विवेक से मनुष्य प्रऔति में उपलब्ध विविध प्रकार की वस्तुओं से तारतम्य स्थापित करने में सक्षम होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा केवल मनुष्य के लिये है। इस सन्दर्भ में अल्तेकर का विचार है कि-"वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल अभिप्राय रहा है कि शिक्षा प्रकाश की वह ज्योति है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शन करती है।"

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ

शिक्षा शब्द का अर्थ है-सीखना एवं सिखाना। शिक्षा का पर्यायवाची शब्द 'विद्या' है। जिसका तात्पर्य है-जानना, ज्ञान प्राप्त करना है। इस प्रकार शिक्षा सीखने-सिखाने की, जानने या ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया है। इसके साथ अध्यापक शिक्षा भी सम्बद्ध है।

अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है जिसमें विभिन्न स्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने के लिए प्रयत्न किया जाता है कि अग्रिम जन्म को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तान्तरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में वे सक्षम हो सके। शिक्षण को एक उद्यम या प्रोफेशन के रूप में स्वीकार करने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि अध्यापक शिक्षा वह आयोजन हो जिसमें इस उद्यमगत नीति बोध एवं संवेगात्मक पक्ष में भी दक्षता प्रदान करने की व्यवस्था हो। इस प्रकार अध्यापक शिक्षा एक कार्यक्रम ही नहीं है बल्कि एक ऐसा मिशन या आयोजन है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय सन्दर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निर्वहन के लिए दक्षता तथा कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्तियों को शिक्षित किया जा सके।

मूल्य

मूल्य समाज के दर्पण होते हैं इनके द्वारा ही समाज की वास्तविक सत्ता को स्वीकारा जाता है। मूल्य दूसरे रूप में मानव के मूल धन होते हैं। मूल्य केन्द्रित शिक्षा चन्द्रमा जैसी निर्मल होकर आनन्द स्वरूप एवं स्वयंमेव प्रकाशमय होती रहती है। इसी

के प्रभावों द्वारा किसी भी देश में चतुर्दिक दिशाओं को एक ऐसा वातावरण प्रदान किया जाता है। जिसमें मूल्य शिक्षा पर आधारित राष्ट्रीयता की नींव नवीनतम भूमिका को लेकर एक वृहत सामाजिक प्रणाली की ओर उन्मुख होने लगती है। इस उपागम में ही समस्त शैक्षिक प्रक्रियाओं की उपलब्धि समाहित है।

नयी शिक्षा नीति (1985-86) के अनुसार-"सुसंगत एवं व्यवहार मूल्य परक शिक्षा प्रणाली को ऐसी प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू किया जाये जो मानव जीवन के प्रति तर्क संगत वैज्ञानिक तथा नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित हों।"

वस्तुतः मूल्य परक शिक्षा उन सभी क्रियाओं एवं प्रक्रियाओं की समष्टि है जिनसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कुशलताओं एवं सृजनताओं से व्यवहारपरक मूल्यों के व्यवहार रूपी प्रतिमानों की रचना करता है। इनका आधार जैवकीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं पारिस्थितिकी होता है। जिनका प्रभाव शिक्षा एवं शिक्षक के विभिन्न स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। यह चक्रिय प्रक्रिया के रूप में निरन्तर अग्रसर होकर नवीन सन्दर्भ, उपागम आयामों व दृष्टिकोणों को विकसित करती रहती है।

मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश में भारी प्रगति हुई है आज हम अत्यन्त गर्व के साथ कह सकते हैं कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, औषि, उद्योग, संचार, यातायात और चिकित्सा के क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी तीव्र गति से शैक्षिक प्रगति हुई है। देश में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, माध्यमिक और प्राथमिक विद्यालयों, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा संस्थाओं, प्रशिक्षण संस्थाओं, औषि संस्थाओं और दूरस्थ शिक्षा साधनों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी हुई है। छात्रों का नामांकन बढ़ा है। शिक्षकों की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी हई है, शैक्षिक कार्यक्रमों के परिष्करण और विविधता के सन्दर्भ में पर्याप्त प्रगति हई है। लेकिन जब हम मूल्यों के तेजी से हो रहे ह्रास पर विचार करते हैं तो हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। भौतिकता की अन्धी दौड़ में हम अपने आपको, अपने मूल्यों को और अपने आदर्शों को भूल रहे हैं। पाश्चात्य मूल्यों और भारतीय मूल्यों में परस्पर विरोधाभास, भौतिकवादी संस्औति का प्रभाव, वैज्ञानिक ज्ञान के विकास से आध्यात्मिकता के प्रति अनास्था, उपभोक्तावादी संस्औति से लगाव, असुरक्षा की भावना, औद्योगीकरण व नगरीकरण के कारण यंत्रवत जीवन व्यतीत करने, कुलीन तन्त्रीय स्वभाव, राजनैतिक भ्रष्टाचार आदि ने देश में मूल्यों का संकट उपस्थित कर दिया है। आज मानव मूल्य नकारात्मक दिशा की ओर उन्मुख हो रहे हैं और उनमें दिन-प्रतिदिन गिरावट आ रही है। इस मूल्य विहीनता से शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया विऔत, दिशाहीन और निष्क्रिय हो गयी है। देश की इस भयंकर और चिन्तनीय स्थिति ने देश के कर्णधारों का ध्यान मानव मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता की ओर आकर्षित किया है। कोठारी आयोग ने कहा था कि आज के युवकों में सामाजिक व नैतिक मूल्यों के प्रति जो अवहेलनात्मक दृष्टिकोण है उसके कारण ही सामाजिक व नैतिक संघर्ष उत्पन्न हो रहे हैं। इसी कारण हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम शिक्षा व्यवस्था को मूल्य परक बनाये।

शिक्षकों को मूल्य शिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता

आज शिक्षकों द्वारा भारत के भविष्य को संवारने का दायित्व संभालने की आशा प्रतीत होने लगी है। यह स्वप्न शिक्षा द्वारा ही साकार किया जा सकेगा। हमारी शिक्षा संस्औति प्रधान है तथा हमारी संस्औति में इसकी पूर्ण व्यवस्था है जिसमें शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा रूपी शक्ति आदि मूल्यों द्वारा मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने तथा प्रऔति के सामंजस्य का दोहन किया जाता है। प्राऔतिक संसाधनों के दोहन के साथ-साथ इनका संरक्षण और अभिवृद्धि पर ध्यान दिया जाता है। अतः शिक्षक समुदाय को विद्यालयों में इस प्रकार के शिक्षण पर विशेष बल देने की आवश्यकता है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

प्रत्येक शिक्षक व सभी शिक्षकों को मूल्यों की शिक्षा प्रदान करनी चाहिये। शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण-कार्यों को वैज्ञानिक-विधियों व अन्य सहायक सामग्री के प्रयोग द्वारा उसको व्यावहारिक, रचनात्मक तथा सृजनात्मक तथा मूल्यपरक बनाने हेतु भरसक प्रयत्न करना चाहिये ताकि वह भारत की नवीन संरचना में भावी एवं उपयुक्त छात्रों का निर्माण कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डॉ0 सिंह गया (2013) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।

सक्सेना एन0 आर0 स्वरूप एवं डॉ0 चतुर्वेदी शिखा (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।

वर्मा जी0 एस0 (2012) मूल्य शिक्षण इण्टन नेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ।

डॉ0 भट्टाचार्य जी0 सी0 (2005) अध्यापक शिक्षा विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.